चाँदनी महल का रहस्य

इंदु भूषण अरोड़ा

चैप्टर 1

पोस्ट-कार्ड

रजत आठवीं कक्षा का छात्र था.

एक दिन वह स्कूल से घर लौट रहा था. स्कूल घर से अधिक दूर न था इसलिए वह पैदल ही स्कूल आया-जाया करता था. रास्ते में उसने एक जगह एक पोस्ट-कार्ड पड़ा देखा. कुछ सोचे बिना ही उसने वह पोस्ट-कार्ड उठा लिया. पोस्ट-कार्ड किसी दुर्गा सिंह के नाम भेजा गया था.

एक पल के लिए रजत को लगा कि उसे किसी और का पोस्ट-कार्ड उठाना नहीं चाहिए था. उसने पोस्ट-कार्ड को उसी जगह रख देने की बात सोची. पर फिर न जाने क्यों उसका मन हुआ कि पत्र पढ़ कर देखे कि उसमें लिखा क्या था. वह पत्र पढ़ने लगा, पत्र में लिखा था:

'तुम्हें तो पता ही है कि मेरे पास माँ का कोई भी चित्र नहीं है. यह बात मुझे बहुत खलती है. माँ का एक चित्र शायद पिताजी ने कभी बनवाया था और उन्होंने उस चित्र को अच्छे से फ्रेम भी करवाया था. क्या तुम्हें उस तस्वीर के बारे में कोई जानकारी है? और अगर वह घर में कहीं है तो उसे ले अपने साथ आओ. विश्वास करो हमारे लिए वह तस्वीर बहुमूल्य है.'

'रोचक पत्र है. लेकिन पत्र लिखने वाले ने अपना नाम नहीं लिखा है, ऐसा क्यों? शायद भूल गया होगा. या कुछ और बात है?' उसने मन ही मन कहा.

उसके मन में आया कि डाकिये ने यह पत्र गलती से रास्ते में गिरा दिया होगा.

‘क्यों न मैं ही जाकर यह पत्र दुर्गा सिंह को दे आऊँ?’ उसने सोचा.

उसने पता देखा, पता था: चाँदनी महल, चौड़ी सड़क, राज नगर. यह जगह उसके घर से ज़्यादा दूर न थी. उसने तय किया कि दुपहर बाद माँ को बता कर वह पत्र चाँदनी महल में दे आयेगा.

शाम होने से पहले माँ को बता कर वह पत्र देने चल दिया. राज नगर पहुँच कर वह चौड़ी सड़क आ गया. उसने कई घरों के बाहर लगी नाम पट्टियाँ देखी. पर किसी पट्टी पर ‘चाँदनी महल’ न लिखा था. एक जगह उसने एक पान वाले की छोटी सी दुकान देखी, वह उस पान वाले के पास आया और बोला, “क्या आपको पता है कि चाँदनी महल कहाँ है?”

पान वाले ने उसे घूर कर देखा. फिर उसने कहा, “क्यों? तुम्हें क्या काम हैं वहाँ?”

रजत पान वाले को पोस्ट-कार्ड के बारे में बताने ही वाला था कि उसके मन में आया, ‘मैं इसे क्यों कुछ बताऊँ? इसने

प्रश्न किस ढंग से किया था? और किस तरह मुझे घूर कर देख रहा है. नहीं, इसे कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है.'

उसने कहा, "मैं वह महल देखना चाहता हूँ. मेरा एक मित्र इधर रहता है. उसने कहा था कि यहाँ एक पुराना महल है, किसी राजा का. शायद चाँदनी महल ही वह महल है."

"मज़ाक कर रहा होगा वह," पान वाले न कहा और फिर हाथ से एक घर की ओर संकेत किया. चाँदनी महल सड़क के दूसरी ओर दुकान से थोड़ी दूरी पर ही था.

चाँदनी महल नाम की ही महल था. वह एक साधारण सा मकान था, एक पुरानी-सी दो मंज़िला हवेली थी. हवेली के चारों ओर चार-पाँच फुट ऊंची दीवार थी. सामने लोहे का गेट था जिस पर शायद वर्षों से पेंट नहीं हुआ था. चारदीवारी के भीतर हर तरफ घास और झाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं. हवेली के पीछे एक विशाल पेड़ भी था.

चाँदनी महल पूरी तरह सुनसान लग रहा था. ऐसा लगता था जैसे महीनों से उसका गेट भी न खोला गया हो. रजत को यह सब विचित्र लगा. उसने आसपास देखा. वहाँ कोई भी न था

सिवाय एक भिखारी के जो चाँदनी महल के सामने बैठा भीख मांग रहा था.

‘अगर यहाँ कोई रहता नहीं है तो यह पत्र इस पते पर क्यों भेजा गया?’ रजत ने सोचा.

उत्सुकतावश रजत ने लोहे का गेट थोड़ा-सा खोला और चाँदनी महल की चारदीवारी के अंदर आ गया.

चैप्टर 2

भिखारी

रजत को चाँदनी महल के अंदर कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दिया. वह टहलते-टहलते उस मकान की पिछली तरफ आ गया. चाँदनी महल और उसका आस-पास की जगह का निरीक्षण करने में वह इतना मग्न था कि उसने देखा ही नहीं कि कोई उसके पीछे आ रहा था.

अचानक किसी ने पीछे से आकर उसे पकड़ लिया. उस आदमी ने उसके मुँह को अपने हाथ से कस कर दबा दिया. रजत ने पूरी ताकत लगा कर अपना सिर घुमाया. जिसने उसे

पकड़ रखा था वह वही भिखारी था जो बाहर सड़क पर भीख मांग रहा था. उसे देख कर रजत स्तब्ध हो गया.

भिखारी ने धमकाते हुए पूछा, “तुम कौन हो? यहाँ क्या करने आये हो?”

रजत ने संकेत किया कि उसके मुँह से हाथ हटाये. भिखारी ने हाथ हटाया तो रजत बोला, “मैं तो यह पत्र देने आया था.” वह थोड़ा घबरा गया था. उसने पोस्ट-कार्ड भिखारी को दिखाया. भिखारी ने झट से पोस्ट-कार्ड छीन लिया. उसे उलट-पलट कर देखने लगा. नाम, पता पढ़ कर उसे अपनी मुट्ठी में दबा लिया.

“यह पत्र तुम्हें किसने दिया,” उसने पूछा.

“यह मुझे रास्ते में पड़ा मिला था, अपने स्कूल से लौटते समय.”

“तुम इसे यहाँ क्यों लेकर आये हो?” रजत को भिखारी का चेहरा बहुत डरावना लग रहा था.

“मुझे लगा कि डाकिये ने इसे गलती से इसे रास्ते में गिरा दिया होगा. मैंने सोच कि मैं स्वयं इसे दे आऊँ.”

“झूठ नहीं बोलो. बताओ, किसने तुम्हें यहाँ भेजा है? यहाँ क्यों आए हो?” उसने रजत की बाँह ज़ोर से मोड़ते हुए कहा.

“मैं सच कह रहा हूँ. मुझे किसी ने नहीं भेजा. यह पत्र मुझे रास्ते में पड़ा मिला था. मैं यही देने आया हूँ.” भिखारी कुछ देर तक उसे घूर कर देखता रहा, फिर उसने रजत को छोड़ दिया.

“तुरंत भाग जाओ यहाँ से. इधर कभी न आना. अगर आये तो मैं तुम्हें गोली मार दूंगा.” भिखारी ने अचानक पिस्तौल निकाल ली. रजत ने सोचा भी न था कि भिखारी के पास पिस्तौल होगी. वह सहम गया.

रजत तुरंत भाग खड़ा हुआ. उसे भागता देख कर अपनी दुकान में बैठ पान वाला थोड़ा हैरान हुआ. परन्तु पान वाले का ध्यान इस ओर न गया था कि चाँदनी महल के सामने बैठा भिखारी अपनी जगह से गायब हो गया था.

उधर रजत ने घर पहुँच कर ही राहत की साँस ली. वह आश्चर्यचकित भी था. उसे यह समझ न आ रहा था कि अगर चाँदनी महल में कोई रहता नहीं था तो वह पत्र उस पते पर क्यों भेजा गया था? वह भिखारी कौन था? उसने पोस्ट-कार्ड क्यों छीन लिया था? उसके पास पिस्तौल क्यों थी? क्या वह सच में एक भिखारी था? या कोई पुलिसवाला? गुप्तचर? चाँदनी महल का रहस्य क्या था? कई प्रश्न एक साथ उसके मन में उठ रहे थे. और वह इन प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए बहुत उत्सुक था.

रजत शर्लक होम्स की कहानियाँ बड़े चाव से पढ़ता था. शर्लक होम्स की सूझबूझ से और उसके कारनामों से बहुत प्रभावित था. वास्तव में बड़े होकर वह एक गुप्तचर बनना चाहता था. एक बार उसने अपने पापा से यह बात कही भी थी. उसके पिता खिलखिला कर हँस दिए थे. उन्होंने उसका मज़ाक भी उड़ाया था. पर रजत ने पापा की बात का बुरा न माना था. शर्लक होम्स तो उसका हीरो था.

रजत को लगा कि अपनी योग्यता दिखाने का यह अच्छा अवसर था. उसने मन ही मन कहा कि अपनी सूझबूझ और साहस से इस रहस्य को सुलझा कर ही रहेगा. उसने निश्चय किया कि वह एक बार फिर चाँदनी महल जाएगा और थोड़ी खोजबीन करेगा. उस भिखारी की चेतावनी को उसने बिलकुल भुला दिया.

अगले दिन जब वह स्कूल से लौट रहा था तो उसने रास्ते में एक जगह एक बूढ़े व्यक्ति को देखा. वह एक देहाती जैसा लग रहा था. उसके हाथ में एक कागज़ था. और वह इधर-उधर देख रहा था.

रजत के निकट आने पर उसने कहा, "बेटा, यह पता बताओगे कहाँ है? मैं एक घंटे से यहाँ-वहाँ भटक रहा हूँ. कोई कुछ बताता ही नहीं. यहाँ तो कोई बात करने को भी तैयार नहीं है. पता नहीं कैसे हैं लोग यहाँ के?"

रजत को वृद्ध पर तरस आया. उसने आगे बढ़ कर कागज़ उसके हाथ से लिया और पढ़ने लगा. कागज़ पर जो कुछ

लिखा था उसे पढ़ते ही रजत चौंक गया. वह थोड़ा भयभीत भी हो गया.

चैप्टर 3

अपहरण

जो कागज़ उस वृद्ध ने रजत को पढ़ने के लिए दिया था उस पर किसी का पता न लिखा था. उस पर तो एक धमकी लिखी थी.

‘चुपचाप मेरे साथ चलो नहीं तो मैं तुम्हें बेहोश कर के ले जाऊँगा. मैं तुम्हें कोई कष्ट नहीं पहुँचाना चाहता. मुझे तो बस थोड़ी सी जानकारी चाहिए.’

इस बीच बूढ़े ने रजत का एक हाथ मज़बूती से पकड़ लिया था. उसके दूसरे हाथ में एक रुमाल था. उस रुमाल की ओर

उसने अपनी आँखों से संकेत किया. बूढ़े ने बड़ी कठोर लेकिन धीमी आवाज़ में कहा, “चिल्लाने की कोशिश भी न करना. यहाँ कोई तुम्हारी सहायता नहीं करने आएगा. कोई आया भी तो मैं उसे मार डालूँगा. चार आदमियों को मैं पहले ही मार चुका हूँ. तुम्हें भी मार सकता हूँ.”

रजत सोच रहा था कि इस स्थिति में उसे क्या करना चाहिए. उसने मन ही मन कहा, ‘बूढ़े ने अपने रुमाल में अवश्य ही क्लोरोफॉर्म या ऐसी ही कोई दवा लगा रखी होगी. अगर यह मुझे मूर्छित करके ले गया तो मुझे पता न चलेगा कि यह आदमी मुझे कहाँ ले जा रहा है. फिर वहाँ से बचने की संभावना कम हो जायेगी. और यह सच ही कह रहा है, अगर मैं चिल्लाया तो शायद ही कोई मेरी सहायता करने आये. कोई पुलिस वाला भी आसपास दिखाई नहीं दे रहा. अगर इसके पास कोई पिस्तौल या चाकू हुआ तो यह मुझे घायल भी कर सकता है. इसके साथ चलने में ही समझदारी है, अवसर मिलते ही भागने की कोशिश करूँगा.’

रजत बूढ़े के साथ चल दिया. वह उसे एक कार की ओर ले गया. रजत को कार के अंदर धकेल कर उसने हाथ में पकड़े रुमाल से रजत का मुँह दबा दिया. रजत ने खूब हाथ-पाँव मारे पर वह कुछ न कर सका और शीघ्र ही मूर्छित हो गया. रजत को पिछली सीट पर लिटा कर कार को तेज़ी से चलाता हुआ वह आदमी नगर से नगर से दूर आ गया.

एक सुनसान जगह में बूढ़े ने कार रोक दी. रजत अभी भी मूर्छित था. बूढ़ा उसकी मूर्छा दूर होने की प्रतीक्षा करने लगा.

रजत को जब होश आया तो उसने देखा कि बूढ़ा उसके साथ ही बैठा था और उसने अपने हाथ में एक बड़ा चाकू पकड़ रखा था. बूढ़े ने चाकू की नोक को रजत के गले पर दबाया और कहा, “चाँदनी महल में उस भिखारी से तुम्हारी क्या बात हुई थी?”

रजत आश्चर्यचकित हो गया, उसे समझ न आया कि इस आदमी को कल की घटना के बारे में कैसे पता लगा था. वह डरा हुआ था, परन्तु उसने इतनी विषम स्थिति में भी अपना

साहस न खोया और बोला, “कौन सा भिखारी? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा. ओफ्, मेरा सिर चकरा रहा है.”

बूढ़े ने चाकू की नोक को थोड़ा और दबाया. उसने धमकाते हुए कहा, “वही भिखारी जिसने चाँदनी महल में तुम्हें पकड़ लिया था. उससे तुम्हारी क्या बात हुई थी?”

बूढ़े का डरावना चेहरा देख कर रजत थोड़ा भयभीत हो गया. बूढ़े के मुँह से बदबू आ रही थी, शायद उसने शराब पी रखी थी. डर कर रजत झट से बोला, “मैं तो पत्र देने गया था जो मुझे रास्ते में गिरा हुआ मिला था. उस भिखारी ने वह पत्र मुझ से छीन लिया.”

“पत्र? किस का पत्र था? किस ने लिखा था? उसमें क्या लिखा था?” उसने चीखती हुई आवाज़ में पूछा.

“पत्र दुर्गा सिंह के लिए था पर उसमें क्या लिखा था मुझे नहीं पता. पत्र बंद लिफ़ाफ़े में था.” रजत ने आधा सच, आधा झूठ कहा.

“तुम झूठ बोल रहे हो, तुम ने पत्र पढ़ा था, मैंने तुम्हें पत्र पढ़ते हुए देखा था. बताओ उसमें क्या लिखा था?”

बूढ़े की यह बात सुन रजत समझ गया कि वह झूठ बोल रहा था. वह सिर्फ उसे डराने के लिए यह बात कह रहा था.

“नहीं, मैं सच कह रहा हूँ. मैंने पत्र खोला भी नहीं था,” रजत ने बिना घबराए हुए कहा.

“तुम चाँदनी महल के अंदर क्यों गये थे? किसने भेजा था तुम्हें? बोलो?” बूढ़े ने धमकाते हुए रजत से पूछा.

रजत को समझ न आ रहा था कि वह किस प्रकार इस मुसीबत से बाहर निकल पायेगा. तभी उसने एक पुलिस जीप को उधर आते हुए देखा.

चैप्टर 4

पुलिस इंस्पेक्टर

संयोगवश एक पुलिस जीप उधर से गुज़री. जीप में इंस्पेक्टर संजीव किसी काम से कहीं जा रहा था. सुनसान जगह में सड़क किनारे एक कार को खड़ा देख कर इंस्पेक्टर को कुछ संदेह हुआ. उसने अपनी जीप रोक दी और गाड़ी से उतरने लगा. लेकिन जीप से उतरते-उतरते उसके मन में एक बात आई. वह रुक गया और फिर जीप की ड्राइविंग सीट पर बैठ गया.

रजत ने पुलिस जीप को रुकते देखा तो वह मन ही मन प्रसन्न हुआ. उसे लगा कि पुलिस अधिकारी अवश्य उसकी सहायता करेगा. लेकिन जब इंस्पेक्टर जीप से उतरते-उतरते फिर जीप में बैठ गया तो रजत थोड़ा घबरा गया. वह मन ही मन उस अधिकारी से प्रार्थना करने लगा, ‘प्लीज़, जाइये नहीं, मेरी सहायता करिये.’

लेकिन इंस्पेक्टर वहाँ से गया नहीं. उसने जीप को घुमा कर कार के सामने खड़ा कर दिया और बाहर आ गया. इस बीच बूढ़े ने चाकू को जेब में छिपा कर रख लिया था. जेब से ही उसने नोक को रजत के पेट में चुभा कर धीरे से कहा, “लड़के, चुपचाप बैठे रहना. अगर मुँह खोला तो यह चाकू पेट के अंदर चला जाएगा. तुम्हारी जान लेने में मुझे ज़रा भी हिचकिचाहट न होगी.”

इंस्पेक्टर संजीव ने निकट आकर पूछा, “क्या कोई परेशानी है? मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूँ?”

“नहीं, नहीं साहब. कोई परेशानी नहीं है. हम लोग अपने गाँव जा रहे हैं. मेरे भांजे को उलटी आने लगी तो मैंने गाड़ी रोक

दी. अब यह पूरी तरह स्वस्थ हो गया. हम बस जाने ही वाले है. वैसे भी हमें बहुत देर हो गई है."

इतना कह कर उसने चाकू पर दबाव डाला और बड़े प्यार से कहा, "क्यों बेटा? अब अच्छा लग रहा है न? उलटी तो नहीं आ रही? अब चलें? पहले ही बहुत देर हो गई है."

चाकू रजत की पेट में चुभने लगा, पर वह बड़े तेज़ी से सोच रहा था. उसे लग रहा था कि बूढ़े आदमी से बचने का इससे अच्छा अवसर उसे दुबारा न मिलेगा. उसे शीघ्र ही कुछ करना होगा. वह चिल्ला कर इंस्पेक्टर से सहायता मांग सकता था पर उसे डर लग रहा था कि बूढ़ा सच में ही न चाकू से उसका पेट काट डाले. तभी उसने सोचा कि एक पुलिस अफसर के सामने बूढ़ा उसे मारने का साहस न कर पायेगा. इंस्पेक्टर ने अपनी जीप कार के सामने खड़ी कर रखी थी. इंस्पेक्टर स्वयं उधर ही खड़ा था जिधर बूढ़ा कार में बैठा था. इंस्पेक्टर का हाथ उसकी पिस्तौल के निकट था. रजत ने अनुमान लगाया कि इंस्पेक्टर को भी कुछ संदेह था और वह पूरी तरह सतर्क

था. ऐसी स्थिति में बूढ़े के लिए चाकू मार कर वहाँ से भागना संभव न होगा.

रजत ने निर्णय लिया कि इस मुसीबत से बचने के लिए उसे थोड़ा जोखिम तो उठाना ही पड़ेगा.

उसने चिल्ला कर कहा, “सर, मुझे बचाओ, यह आदमी मेरा अपहरण कर रहा है.”

इंस्पेक्टर ने एक ही पल में अपनी पिस्तौल निकाल कर बूढ़े के माथे से लगा दी. रजत का अनुमान सही निकला. बूढ़ा उसे मारने का साहस न कर पाया. परन्तु वह घबराया भी नहीं. मुस्कराते हुए उसने इंस्पेक्टर से कहा, “अरे साहब, मेरा भतीजा बहुत ही नटखट है. उसकी बात का बुरा न माने. यह शरारती तो सब को हैरान कर देता है.”

फिर उसने रजत से कहा, “अब क्या शरारत सूझ गई है तुम्हें? पुलिस वालों से मसखरी नहीं करते. ”

“नहीं सर, यह झूठ कह रहा है. इसने मेरा अपहरण किया है. इसके हाथ में एक चाकू है जो इसने मेरे पेट पर चुभा रखा है,” रजत ने भी हिम्मत से काम लिया.

“अरे बेटा, मैंने कितनी बार समझाया है. हर समय इस तरह शरारत करना अच्छी बात नहीं होती,” बूढ़े ने चाकू दबाते हुए कहा.

‘पहले भाँजा कहा और अब भतीजा? लड़का शायद सच बोल रहा है,’ इंस्पेक्टर ने मन ही मन कहा. फिर उसने गरजती आवाज़ में कहा, “अपने हाथ उठा कर बाहर आ जाओ, अभी!”

बूढ़ा समझ गया कि वह फंस गया था. इंस्पेक्टर से बच कर निकल भागना संभव न था. उसने गुस्से से रजत को देखा. फिर घूम कर इंस्पेक्टर को देखा. उसने धीरे से चाकू कार में ही गिरा दिया और बाहर आ गया. रजत ने चाकू उठा कर पुलिस अफसर को दिखाया और कार से बाहर आ गया. “सर, यह रहा इसका चाकू जो इसने कार में गिरा दिया था.”

इंस्पेक्टर ने बूढ़े को हथकड़ी लगा दी और उसे जीप में बिठा दिया. रजत को लेकर वह पुलिस स्टेशन आ गया. जो कुछ रजत जानता था वह उसने इंस्पेक्टर को बता दिया. इंस्पेक्टर ने उसे घर भिजवा दिया लेकिन उसे चेतावनी भी दी कि वह कभी भी चाँदनी महल की ओर न जाए.

चैप्टर 5

चाँदनी महल का रहस्य

हीरों की चोरी

रजत चाँदनी महल का रहस्य जानने को उतावला हो रहा था. वह यह भी जानना चाहता है कि बूढ़े से पूछताछ करने पर पुलिस को क्या जानकारी मिली थी. लेकिन वह जानता था कि इंस्पेक्टर संजीव उसे कुछ न बताएगा. उसे अपने मित्र शशांक का ध्यान आया. शशांक के पिता पुलिस अधीक्षक थे. माँ को बता कर वह शशांक के घर आया. शशांक के पिता घर

पर ही थे. उसकी बात सुन वह बोले, “अच्छा तुम हो वह साहसी लड़के जिस ने एक अपराधी को पकड़वाया था. शाबाश बेटा, कठिनाई के समय आदमी को कभी भी अपना साहस और धैर्य नहीं खोना चाहिए.”

“अंकल, उस बूढ़े ने कुछ बताया?” रजत अपने को रोक न पाया.

“तुम तो बहुत उत्सुक हो सब जानने के लिए,” शशांक के पिता ने मुस्कराते हुए कहा. वह कुछ पल चुप रहे और फिर बोले, “वह कोई बूढ़ा नहीं है. उसने बस वैसा भेष बना रखा था. उसका नाम प्रताप है. पर जो कहानी उसने सुनाई है वह बहुत ही रोचक है.”

“अंकल, प्लीज़, क्या मुझे वह कहानी सुनायेंगे?”

“अवश्य. सुनो, आज से पाँच वर्ष पहले जयपुर में हीरों के एक व्यापारी जगत मल के घर में दस करोड़ के हीरों की चोरी हुई थी. चोरी मान सिंह नाम के एक आदमी ने की थी. मान सिंह उस समय जगत मल का ड्राइवर था. पर वह अकेला नहीं था. उसका पूरा गिरोह था. चार लोगों ने

उसका साथ दिया था. वह थे भवानी सिंह, दुर्गा सिंह, पन्ना लाल और प्रताप. भवानी सिंह और दुर्गा सिंह दोनों मान सिंह के भाई हैं. वह दोनों जगत मल के घर पर चौकीदारी करते थे. पन्ना लाल और प्रताप सेठ के शो रूम में काम करते थे. चोरी की सारी योजना मान सिंह ने बनाई थी. सारा काम उन्होंने बड़ी चालाकी और सावधानी के साथ किया और अपना कोई सुराग उन्होंने नहीं छोड़ा था.

"हीरे चुराने के बाद मान सिंह ने हीरे छिपा दिए. अपने साथियों को उसने कुछ समय के लिए जयपुर के बाहर जाकर कहीं छिपे रहने के लिए कहा. उसका मानना था कि समय बीतने के साथ पुलिस की जांच-पड़ताल सुस्त पड़ जाएगी क्योंकि पुलिस को उनका कोई सुराग न मिला था. उसका कहना था कि जब जाँच ठंडी पड़ जायेगी तभी वह हीरों को बेचने की बात सोचेंगे.

"एक साल बाद मान सिंह ने पचास लाख के हीरे बेच कर सब को वह पैसे बाँट दिए और कहा कि तीन साल बाद सब

चाँदनी महल में मिलेंगे और बाकी के हीरे तब सब में बाँटे जायेंगे. उसने यह भी चेतावनी दी कि पाँचों में से कोई भी अपने पास मोबाइल फोन नहीं रखेगा और न ही एक दूसरे से मिलने की कोशिश करेगा."

"बाकी चोरों ने उसकी बात मान ली?" रजत ने पूछा.

"प्रताप ने बताया कि पन्ना लाल ने यह बात मानने से मना कर दिया था. उसका कहना था कि हीरे उसी समय बाँट दिए जाएँ पर मान सिंह अपनी बात पर अड़ा रहा, सब में खूब कहा-सुनी हुई पर हार कर सब को मान सिंह की बात माननी ही पड़ी."

"फिर तीन साल बाद क्या हुआ, अंकल?" रजत ने पूछा.

"तीन सालों बाद सब चाँदनी महल आ गये लेकिन मान सिंह नहीं आया. न ही उसका कोई सन्देश आया. उसके भाइयों को भी न पता था कि वह कहाँ था और उसने हीरे कहाँ छिपा कर रखे थे. गिरोह में फूट पड़ गई. मान सिंह के भाइयों ने कहा कि उन्हें मान सिंह के पते-ठिकाने की कोई जानकारी न थी. वह दोनों भी हैरान थे कि मान सिंह क्यों न आया

था. लेकिन प्रताप और पन्ना लाल को भाइयों की बात का विश्वास नहीं था. उन दोनों को लगा था कि तीनों भाई उन्हें धोखा देकर सारे हीरे हड़पना चाहते थे. वह उनके दुश्मन बन गये. उधर दुर्गा सिंह और भवानी सिंह भी अपने भाई पर क्रोधित थे. उन्हें लगा कि मान सिंह उन्हें धोखा देकर अकेले ही सारे हीरे हड़पना चाहता था. तभी से चारों चोर मान सिंह और हीरों की तलाश कर रहे हैं. इस तलाश का केंद्र है चाँदनी महल. सब को लगता है कि हीरे चाँदनी महल में कहीं छिपा कर रखे गये हैं."

"पर अंकल, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मान सिंह ने उन्हें भ्रमित करने के लिए ऐसा झूठ बोला हो? हीरे उसी के पास हों? मुझे नहीं लगता वह हीरों को अपने से दूर रखता होगा," रजत ने कहा.

"पर इतने हीरे लेकर यहाँ-वहाँ भागते फिरना भी कोई समझदारी वाली बात नहीं है. हीरे उसने कहीं छिपा कर ही रखे होंगे, चाँदनी महल में नहीं तो कहीं और."

“अंकल, मुझे लगता है कि उस पोस्ट-कार्ड में हीरों से संबंधित कोई गुप्त सन्देश होगा,” रजत ने कुछ सोच कर कहा.

“ऐसा हो सकता है,” पुलिस अधीक्षक ने कहा.

“अंकल, एक बात सोचने की है. अगर चाँदनी महल में कोई रहता नहीं है तो वह पत्र चाँदनी महल के पते पर क्यों भेजा गया? कोई तो है जो चाँदनी महल के पते पर आई डाक लेता होगा. आप उस डाकिये से पूछताछ करवाएं जो राज नगर की डाक बाँटता है. उससे कोई न कोई जानकारी मिलेगी,” रजत ने कहा.

“अरे, तुम तो बहुत चतुर हो. डाकिये से अवश्य ही हमें कुछ जानकारी मिलेगी. मैं अभी इंस्पेक्टर संजीव को कहता हूँ कि वह उस डाकिये से तुरंत पूछताछ करे.”

“अंकल, क्या मैं इंस्पेक्टर साहब के साथ जा सकता हूँ?” रजत के अंदर का गुप्तचर कुलबुला रहा था.

“नहीं, तुम्हें इस मामले में उलझना नहीं चाहिए. अपराधियों को पकड़ना पुलिस का काम है, बच्चों का नहीं. और यह अपराधी तो खतरनाक अपराधी हैं. उन्हें भनक भी नहीं लगनी चाहिये कि तुम इस मामले से जुड़े हो.”

“अंकल, प्लीज़. मुझे साथ जाने दें. हो सकता है कोई ऐसी बात मुझे सुझाई दे जाए जो जाँच में सहायक हो,” रजत ने कहा.

“नहीं, मैं तुम्हारी बात नहीं मान सकता. लेकिन तुम कल आना. हम इस केस पर कल आगे चर्चा करेंगे.”

चैप्टर 6

पान वाला

रजत यह जानने को बहुत उत्सुक था कि पुलिस को डाकिये से क्या जानकारी मिली थी. अगले दिन रजत फिर शशांक के घर आया. उसके पिता अभी घर न आये थे. वह वहीं रुक कर उनकी प्रतीक्षा करने लगा.

जब वह आये तो उन्होंने रजत को बताया कि डाकिये से पूछताछ हो गई थी. डाकिये ने बताया था कि चाँदनी महल की डाक एक पान वाला लेता है जिसकी दुकान वहीं पास में है.

“अंकल, मैंने उसी पान वाले से चाँदनी महल के बारे में पूछा. उसने बड़े अजीब ढंग से मेरे साथ बात की थी. मुझे घूर कर देख रहा था. वह ठीक आदमी नहीं लगता,” रजत ने बीच में कहा.

“पुलिस ने पान वाले से भी पूछताछ की. पान वाले ने बताया कि चाँदनी महल किसी मान सिंह का है. लेकिन मान सिंह की मृत्यु हो चुकी है. दुर्गा सिंह उसका भाई है. दुर्गा सिंह एक बार पान वाले से मिला था. उसे कह गया था कि अगर उसके नाम का कोई पत्र आये तो अपने पास रख ले. वह स्वयं आकर उससे पत्र ले लिया करेगा. उसके एक-दो पत्र ही आये थे जो पान वाले ने डाकिये से लेकर रख लिए थे और लंबे समय बाद दुर्गा सिंह उससे वह पत्र ले गया था,” शशांक के पिता ने कहा.

“अंकल, जो पोस्ट-कार्ड मुझे मिला था उस पर भेजने वाले ने अपना नाम नहीं लिखा था. हो सकता है वह पत्र भावनी सिंह ने लिखा हो, अपने भाई दुर्गा सिंह को. शायद उसने भाई को कोई गुप्त सन्देश भेजा हो.”

“पर वह पत्र द्वारा संदेश क्यों भेजेगा?”

“दोनों भाई अवश्य ही अलग-अलग छिपे हैं. मोबाइल फोन उनके पास है नहीं. पुलिस के या अपने अन्य साथियों के डर से वह शायद एक-दूसरे से मिलना नहीं चाहते. इसलिए वह पत्रों द्वारा ही एक-दूसरे से समर्पक करते होंगे.”

“मेरे विचार से दोनों भाई पन्ना लाल और प्रताप को धोखा देकर सारे हीरे हड़पना चाहते हैं. इसी कारण कहीं छिप कर एक दूसरे को गुप्त सन्देश भेज रहे हैं.” शशांक के पापा ने कहा.

“अंकल, क्या पुलिस ने उस भिखारी से पूछताछ की जो चाँदनी महल के निकट बैठा भीख मांगता है? उसी ने मुझ से वह पत्र छीना था. उसके पास तो पिस्तौल भी थी,” रजत ने पूछा.

“पुलिस उसे पकड़ने गई थी पर वह वहाँ नहीं मिला. शायद भाग गया है या कहीं छिप गया है.”

“अंकल मुझे लगता है कि इस रहस्य की कुंजी हमें चाँदनी महल में ही मिलेगी,” रजत ने सुझाव दिया.”

“अभी तक तो ऐसा कोई सुराग मिला नहीं जिससे यह अनुमान लगाया जा सके.”

“पर अंकल, उस जगह की तलाशी लेने में कोई हर्ज नहीं है. कम से कम यह तो निश्चित हो जाएगा कि उस जगह का कोई रहस्य नहीं है.”

“हाँ, तुम ठीक कह रहे हो. मैं स्वयं यह काम करूंगा.” उन्होंने फोन कर इंस्पेक्टर से कहा कि कुछ सिपाही लेकर चाँदनी महल आ जाए.

“अंकल, क्या मैं आपके साथ चल सकता हूँ?”

“ऐसा मुझे करना तो नहीं चाहिए, परन्तु मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगा. शायद इस रहस्य की कुंजी तुम्हारे हाथ ही लग जाए.”

शंशाक के पापा रजत को साथ ले चाँदनी महल आ गये. इंस्पेक्टर कुछ सिपाहियों के साथ पहले ही पहुँच चुका था. एक सिपाही को बाहर तैनात कर सब भीतर आ गये. मेन गेट

से अंदर आकर उन्होंने देखा कि हवेली का दरवाज़ा थोड़ा खुला हुआ था.

“सावधान, मुझे लगता है कि भीतर कोई है. होशियार रहना, कोई भागने न पाए,” पुलिस अधीक्षक ने कहा.

बिना आवाज़ किये सब भीतर आ गये. सब खिड़कियाँ, दरवाज़े बंद होने के कारण भीतर अँधेरा था, पुलिस अधीक्षक ने संजीव को संकेत किया. वह बड़ी सावधानी के साथ एक-एक कमरे की तलाशी लेने लगा.

चैप्टर 7

तस्वीर

इंस्पेक्टर संजीव को इस बात का पूरा विश्वास था कि चाँदनी महल के अंदर कोई था. इसलिए वह पूरी तरह सतर्क था. वह नहीं चाहता था कि हवेली में छिपा आदमी उन्हें चकमा देकर भाग जाने में सफल हो. उसे इस बात का भी ध्यान रखना था कि वह आदमी कहीं अचानक किसी पर हमला न कर दे. वह बिना शोर किये होशियारी के साथ हर कमरे की तलाशी लेने लगा. बाकी सब लोग साँस रोके चुपचाप खड़े थे.

रजत बहुत उत्तेजित था. उसे पूरा विश्वास था कि इस जगह का रहस्य अवश्य खुल जायेगा.

एक कमरे से संजीव को थोड़ी आहट सुनाई दी. उसने हौले से दरवाज़ा खोला और फुर्ती के साथ अंदर जाकर एक आदमी को दबोच कर पकड़ लिया. वह आदमी इतना हक्का-बक्का रह गया था कि कुछ कर ही न पाया. उसे पता ही न चला था कि उस हवेली के अंदर पुलिस आ चुकी थी. संजीव ने उसे हथकड़ी लगा दी. उसे पकड़ कर बाहर ले आया.

रजत उसे पहचान गया, "अंकल, यह तो वही भिखारी है जिसने मुझ से वह पत्र छीना था."

"कौन हो तुम? यहाँ क्या कर रहे थे?" इंस्पेक्टर ने पूछा. वह आदमी कुछ न बोला. पुलिस अधीक्षक के संकेत पर सिपाही उसे पुलिस स्टेशन ले गये.

उसके जाने के बाद सब हवेली की तलाशी लेने लगे. हवेली बिलकुल खाली थी. दीवारों और फर्श पर धूल की परते जमी हुई थीं. जगह-जगह मकड़ी के जले बने हुए थे. चाँदनी महल

एक भूत-बंगले जैसा लग रहा था. लगता था की महीनों से कोई भीतर नहीं आया था.

एक कमरे की दीवार पर एक तस्वीर टंगी थी. पर उस पर इतनी धूल जमी थी कि किसी का उस और ध्यान ही नहीं गया. रजत ने वह तस्वीर देखी. उत्सुकता वश हाथ उठा कर उसने उसको छूआ. तस्वीर हल्की सी हिली और थोड़ी सी धूल छिटक कर रजत पर आ गिरी.

"यहाँ तो ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे हीरों के विषय में या उन चोरों के बारे में कुछ पता चले," पुलिस अधीक्षक ने कहा.

"पर सर, वह आदमी कुछ तो यहाँ ढूँढ़ रहा था," इंस्पेक्टर ने कहा.

"हाँ, अंकल, वह भिखारी ऐसे ही नहीं आया होगा. वह तो इस घर के बाहर ही अड्डा जमा कर बैठा था. वह भीतर क्यों आया था, कोई कारण तो होगा? कुछ तो है जो वह ढूँढ रहा था?" रजत ने कहा.

“पर यहाँ तो कुछ भी नहीं. एक वस्तु भी नहीं. हीरों का कोई सुराग यहाँ नहीं मिल सकता,” पुलिस अधीक्षक के कहा.

“अंकल, मुझे लगता यह कि यह रहस्य यहीं खुलेगा. आप मेरे साथ आइये,” वह उन्हें उस कमरे ले आया जहाँ दीवार पर तस्वीर टंगी थी, “किसी सिपाही से कहें कि यह तस्वीर दीवार से उतार ले.”

अधीक्षक के संकेत पर एक सिपाही ने तस्वीर उतार कर रजत को दी. रजत ने उसे अपने रुमाल से साफ़ करने की कोशिश की. उस पर धूल की मोटी परत जमी हुई थी. थोड़े प्रयास के बाद तस्वीर कुछ साफ़ हुई. वह तस्वीर एक औरत की थी जिसने एक बच्चे को गोद में उठा रखा था.

“अंकल, अब मुझे याद आ रहा है कि उस पत्र में एक चित्र के बारे में कुछ लिखा था. शायद वही यह चित्र हो?” रजत ने कहा.

“संभव है.”

“इसमें ऐसा क्या है जो इसे बहुमूल्य बनाता हैं?” रजत से बड़बड़ाया. तभी रजत को तस्वीर के रहस्य की कुंजी मिल गई. उसने कहा, “अंकल, इसके फ्रेम की जांच करवानी होगी.”

“क्यों?”

“यह देखने के लिए कि यह तस्वीर कितनी बहुमूल्य है.”

चैप्टर 8

हीरे

तस्वीर को लेकर सब पुलिस अधीक्षक के दफ्तर आ गये. तुरंत एक सिपाही को बुलाया गया जो बढ़ई का काम जानता

था. उसने सावधानी के साथ फ्रेम खोला. उसने कहा, "साहब, यह फ्रेम कुछ अजीब सा है. इसको काट कर देखें?'

फ्रेम काटा गया तो अंदर से खोखला निकला और वहीं उस खोखली जगह में हीरे छिपा कर रखे गये थे. हीरे देख कर सब प्रसन्नता से खिल उठे. शशांक के पापा ने रजत से कहा, "तुम्हारा संदेह सही निकला. इस भेद का रहस्य इस तस्वीर में ही था."

"अंकल, उस पत्र में किसी चित्र के विषय में कुछ लिखा था. वह पत्र दुर्गा सिंह तक पहुँचा ही नहीं. भिखारी ने पत्र मुझ से छीन लिया. वह भी यही पत्र पढ़ कर चाँदनी महल में घुसा था. उसे भी संदेह होगा कि हीरे उसी घर में हैं. पर उसे यह समझ ना आया कि दीवार पर टंगी तस्वीर में ही हीरे छिपा कर रखे हुए थे. वास्तव में मैंने जब इसे पहली बार देखा था तो मैंने इसे हल्के से छूआ था. थोड़ी धूल छिटक कर मुझ पर ही आ गिरी थी. पर मुझे इसमें कुछ भी महत्वपूर्ण दिखाई नहीं दिया था. परन्तु जब उस घर में कुछ भी न मिला तो मुझे लगा कि दीवार पर लटकी तस्वीर ही रहस्य की कुंजी होनी चाहिए.

मुझे लगा कि वह तस्वीर बहुमूल्य इसलिए थी क्योंकि हीरे उसके अंदर छिपे थे.

“तुम तो पूरे शर्लक होम्स हो,” अधीक्षक ने उसकी प्रशंसा की.

“अंकल, मुझे लगता है कि मान सिंह ने ही हीरे इस तस्वीर के फ्रेम में छिपकर रखे होंगे. और तस्वीर को चाँदनी महल में दीवार पर लटका दिया होगा. योजना के अनुसार उन सब को उसी घर में तीन साल बाद मिलना था, लूट का माल आपसे में बांटने के लिए.” रजत ने कहा.

“पर प्रश्न यह उठता है कि पत्र लिखने वाले को इस तस्वीर के विषय में कैसे पता चला. और क्या सचमुच मान सिंह की मृत्यु हो चुकी है जैसा पान वाले ने बताया था? यह भी समझ नहीं आ रहा कि वह पोस्ट-कार्ड मान सिंह ने लिखा था या भवानी सिंह ने. अगर भवानी सिंह ने लिखा था तो उसे इस चित्र की जानकारी कैसे मिली?” इंस्पेक्टर संजीव ने कहा.

“मुझे लगता है कि तीनों भाइयों को इस तस्वीर की जानकारी थी. संजीव उस भिखारी से ज़रा स्वयं पूछताछ करो. वह कुछ न कुछ जानता होगा,” पुलिस अधीक्षक के संजीव से कहा.

अगले दिन भी माँ को बता कर रजत शशांक के पिता से उनके ऑफिस में आकर मिला. उसी समय इंस्पेक्टर संजीव भी उनसे मिलने आया. संजीव ने बताया कि भिखारी से लंबी पूछताछ की थी. शुरू में तो वह कुछ बता न रहा था, पर संजीव ने हार न मानी थी और आखिरकार भिखारी ने अपने बारे में सब कुछ बता दिया था.

इंस्पेक्टर संजीव ने कहा, "सर, वह भिखारी कोई और नहीं मान सिंह का चौथा साथी पन्ना लाल है. कोई आठ-दस महीने से वह भिखारी का भेष बना कर चाँदनी महल के बाहर बैठ, भीख माँगा करता था. वह इस ताक में था कि अगर मान सिंह या उसके भाई वहाँ हीरे लेने आयें तो वह उनसे अपने हिस्से के हीरे छीन लेगा.

"उसने यह भी बताया कि पाँच-छह महीने पहले मान सिंह से उसकी अचानक मुलाकात हो गई थी. उसने मान सिंह से अपने हिस्से के हीरे मांगे थे. मान सिंह के मना करने पर दोनों में झगड़ा हो गया था, हाथापाई भी हुई थी. और मान सिंह ने उसे घायल कर था और भाग गया था."

“लेकिन पान वाले ने कहा था कि मान सिंह मर चुका है,” रजत ने शंका व्यक्त की.

“उस पान वाले के बारे में भिखारी अर्थात पन्ना लाल ने कहा है कि वह मान सिंह का भाई दुर्गा सिंह है. लेकिन दुर्गा सिंह को पता न चला था कि पन्ना लाल भिखारी के भेष चाँदनी महल के सामने बैठ कर भीख माँगता था. वास्तव में पन्ना लाल भिखारी बन कर चाँदनी महल पर नज़र रखे हुए था और दुर्गा सिंह की निगरानी भी करता था. उसे विश्वास था कि कभी न कभी मान सिंह चाँदनी महल आयेगा या दुर्गा सिंह से मिलेगा. पन्ना लाल अपने हिस्से के हीरे किसी भी कीमत पर पाना चाहता था.”

“दुर्गा सिंह को पकड़ो, तुरंत,” संजीव की रिपोर्ट सुन कर पुलिस अधीक्षक ने कहा.

“सर, मैंने पहले ही तीन आदमी भेज दिए हैं, वह आते ही होंगे,” इंस्पेक्टर संजीव ने कहा.

चैप्टर 9

रहस्य

जो सिपाही दुर्गा सिंह अर्थात पान वाले को पकड़ने गये थे वह दोनों खाली हाथ लौट आये. उन्होंने बताया कि पान वाला दुकान बंद कर गायब हो गया था.

“तुमने अच्छे से पूछताछ की? उसके घर नहीं गए?” संजीव ने उन दोनों से पूछा.

“साहब, खूब पूछताछ की. लेकिन किसी को उसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी. किसी को नहीं पता कि वह कौन था, कहाँ रहता था.”

“उसकी दुकान का मालिक कौन है? क्या उसे भी कुछ नहीं पता? उसने ऐसे ही दुकान किराये पर दे दी थी?” संजीव ने थोड़ा गुस्से से कहा.

“हाँ. साहब. उससे भी बात हो गई है. उसकी दुकान भी वहीं पास में ही. उसने बताया कि उसने बिना छानबीन किये ही दुर्गा दास को दुकान किराये पर दे दी थी,” एक सिपाही बोला.

रजत सारी बात सुन कर कुछ सोच में पड़ गया. उसने शशांक के पिता से कहा, “अंकल, एक बात मन में आ रही है, मान सिंह और उसके दोनों भाई गायब हैं, सिर्फ पन्ना लाल और प्रताप पकड़े गए है. मुझे लगता है कि जो हीरे हमें मिले हैं उनकी जांच करवानी चाहिए.”

“क्यों?”

“शायद मान सिंह ने नकली हीरे चाँदनी महल में छिपा कर रखे थे. असली हीरे उसके पास ही हैं, अभी भी.”

“क्यों?”

“मुझे संदेह है कि वह पन्ना लाल और प्रताप को धोखा देना चाहता है और उनके हिस्से के हीरे हड़प लेना चाहता है.”

“तुम्हारा संदेह ठीक हो सकता है.” पुलिस अधीक्षक ने संजीव से कहा कि तुरंत हीरों की जांच करवाई जाए.

जाँच ने रजत के संदेह को सत्य प्रमाणित कर दिया. चाँदनी महल में छिपा कर रखे गये हीरे नकली थे. यह बात रजत को शशांक के पिता ने फोन कर बताई थी.

“अंकल, तीनों भाई गायब हैं. असली हीरे उन्हीं के पास होंगे. अब वह पोस्ट-कार्ड ही कोई सुराग दे सकता है.”

“पोस्ट-कार्ड से क्या सुराग मिलेगा?”

“सर, हर लैटर पर डाकघर अपनी मोहर लगाता है. उस मोहर से शायद पता लगे की वह पोस्ट-कार्ड किस जगह से पोस्ट

किया गया था. हो सकता है तीनों में से कोई या फिर शायद तीनों उसी जगह छिपे हों," रजत ने सुझाव दिया.

"अरे वाह, तुम तो हर बार कोई न कोई नई बात सुझा देते हो. मैं संजीव को इस काम पर लगा देता हूँ. तीनों में से एक भाई भी पकड़ा गया तो हम इस गुत्थी को सुलझा सकते हैं."

फिर कई दिनों तक शशांक के पिता का कोई फोन न आया. रजत उत्सुकता से उनके फोन की प्रतीक्षा कर रहा था. बीच में एक दिन शशांक ने बताया था कि उसके पापा ने कहा था की रजत के सुझाव के अनुसार ही आगे जाँच की जा रही थी.

दस दिन बाद शशांक के पापा ने उसे बुलाया. वह शशांक के घर पहुँचा तो उसके पिता ने उसे एक मैडल दिया जो पुलिस विभाग से उसकी चतुराई और बहादुरी के लिए उसे दिया गया था.

"अंकल, यह बताएं कि क्या चोर पकड़े गए? क्या हीरे मिल गए?"

“हाँ, तीनों भाई पकड़े गए और हीरे भी मिल गए. संजीव ने भिखारी के अड्डे की तलाशी ली तो उसे वह पोस्ट-कार्ड मिल गया. भिखारी अर्थात पन्ना लाल ने ही उसे बताया था कि पोस्ट-कार्ड कहाँ रखा था.

“उस पोस्ट-कार्ड पर राज गढ़ के एक डाकघर की मोहर लगी थी. हमारी टीम राज गढ़ पहुँच गई. वहाँ जाने से पहले पन्ना लाल और प्रताप से जानकारी ले कर तीनों भाइयों के चित्र हमारे आर्टिस्ट ने बना दिए थे.”

“अंकल, क्या उन दोनों ने सही जानकारी दी थी?”

“वह तो चाहते हैं कि तीनों भाई पकड़े जाएँ. दोनों ने तीनों भाइयों के बारे में बहुत कुछ बता दिया था. इस सारी जानकारी के कारण हमारी टीम ने उन को गिरफ्तार कर लिया. पर सबसे चौंकाने वाली बात तो यह है कि हीरे चाँदनी महल में ही मिले.”

“क्या?” रजत ने सुना तो दंग रह गया.

“हाँ, हीरे उसी घर में छिपा कर रखे हुए थे. वहीं जहाँ वह तस्वीर टंगी थी. यह जानकारी मान सिंह ने दी थी. उस तस्वीर के पीछे, दीवार में एक तिजौरी लगी थी. तिजौरी दीवार में लगा कर उस पर सीमेंट का पलस्तर कर दिया गया था और उसके ऊपर दीवार पर तस्वीर पर लटका दी गई थी.”

“बहुत ही चालाक है यह मान सिंह.”

“अरे, उसी के कहने पर दुर्गा सिंह पान वाला बन कर चाँदनी महल की चौकीदारी कर रहा था. उसे पता था कि पन्ना लाल ही भिखारी है. उसने प्रताप को भी चाँदनी महल के आसपास कई बार देखा था. तीनों भाइयों की योजना थी कि किसी न किसी तरह प्रताप और पन्ना को रास्ते से हटा कर सारे हीरे वह तीनों आपस में बाँट लें.”

“अपने साथियों को ही ठगना चाहते थे तीनों भाई,”

“हाँ, वह पोस्ट-कार्ड भी सोच समझ कर लिखा गया था, यह उनकी चाल थी. उनकी योजना थी कि उस पोस्ट-कार्ड को पन्ना लाल के निकट कहीं गिरा देंगे ताकि पत्र पढ़ कर वह चाँदनी महल से वह तस्वीर चुराने जाए और वह उसे पकड़वा

दें और उससे छुटकारा पा लें. लेकिन वह पत्र डाकिये से कहीं गिर गया और तुम्हें मिल गया. पोस्ट-कार्ड पन्ना लाल तक पहुँच तो गया पर दुर्गा सिंह को इस बात की जानकारी न थी. लेकिन उन्हें यह पता चल गया था कि पन्ना लाल और प्रताप पकड़े हैं, इसलिए अब वह हीरे निकाल कर देश से भाग जाने की तैयारी कर रहे थे. अगर हमारी टीम एक दिन भी देरी से पहुँचती तो शायद वह भाग जाने में सफल हो जाते."

"अंकल, चाँदनी महल का रहस्य सुलझ ही गया."

"पर इसके लिए हम तुम्हारे आभारी हैं. मुझे लगता है कि बड़े हो कर तुम एक अच्छे पुलिस अफसर बन सकते हो."

उनकी बात सुन कर रजत प्रसन्नता से खिल उठा.

समाप्त